

## यमन में शांतिकी उम्मीद

### प्रलिम्स के लिये:

[हौथसि](#), यमन का क्षेत्र और पड़ोस, ऑपरेशन राहत

### मेन्स के लिये:

यमन गृह युद्ध, हौथी संघर्ष का महत्त्व, भारत की रुचि

## चर्चा में क्यों?

यमन में युद्धरत पक्ष सैकड़ों कैदियों की अदला-बदली कर रहे हैं, जसिनेसऊदी समर्थित सरकारी बलों और ईरान समर्थित हौथी वदिरोहियों के बीच एक स्थायी युद्धविराम की उम्मीद जगाई है।



//

## यमन में युद्ध की शुरुआत:

- यमन गृह युद्ध 2011 में सत्तावादी राष्ट्रपति अली अबदुल्ला सालेह (Ali Abdullah Saleh) के अपदस्थ होने के बाद शुरू हुआ। नए राष्ट्रपति, अब्दरबुह मंसूर हादी, आर्थिक और सुरक्षा समस्याओं के कारण देश को स्थिरता प्रदान करने में असमर्थ रहे।

- जैदी शिया मुसलमि अल्पसंख्यक समूह हौथसि ने इसका फायदा उठाया और वर्ष 2014 में उत्तर और राजधानी सना पर नयित्रण कर लिया।
  - इसने सऊदी अरब को चतिति कर दिया, जसि डर था की हौथसि उनके प्रतदिवंदवी ईरान के सहयोगी बन जाएंगे। सऊदी अरब ने तब एक गठबंधन का नेतृत्व किया जसिमें अन्य अरब देश शामिल थे और वर्ष 2015 में यमन में सेना भेजी। हालाँकि वे सना के साथ-साथ देश के उत्तर से हौथियों को खदेड़ने में असमर्थ थे।
  - अप्रैल 2022 में संयुक्त राष्ट्र ने सऊदी के नेतृत्व वाले गठबंधन और हौथी वदिरोहियों के बीच संघर्ष वरिम की मध्यस्थता की, हालाँकि पक्षकार छह महीने बाद इसे नवीनीकृत करने में वफिल रहे।

## स्टॉकहोम समझौता:

- यमन के कुछ हसिसों पर नयित्रण रखने वाले युद्धरत पक्षों ने दसिंबर 2018 में संघर्ष-संबंधी बंदियों को मुक्त करने के लयि स्टॉकहोम समझौते पर हस्ताक्षर कयि थे।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा मध्यस्थता कयि गए समझौते के तीन मुख्य घटक थे:
  - हुदायाह समझौता:
    - हुदायाह समझौते में होदेइदाह शहर में युद्धवरिम और शहर में कोई सैन्य सुदृढीकरण न होने जैसे अन्य खंड शामिल थे और संयुक्त राष्ट्र की उपस्थतिको मज़बूत कयि गया था।
  - कैदी वनिमिय समझौता:
    - अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस समति इस प्रक्रयि की देख-रेख और समर्थन करेगी, जसिकी देख-रेख यमन के महासचवि के वशिष दूत के कार्यालय द्वारा की गई थी।
      - उनका उद्देश्य मौलिक मानवीय सदिधांतों और प्रक्रयिओं को सुनिश्चित करना है जोयमन में घटनाओं के दौरान अपनी स्वतंत्रता से वंचित सभी व्यक्तियों की रहिई या स्थानांतरण या प्रत्यावर्तन की सुविधा प्रदान करते हैं।
  - ताइज़ समझौता:
    - ताइज़ समझौते में नागरिक समाज और संयुक्त राष्ट्र की भागीदारी के साथ एक संयुक्त समति का गठन शामिल है।

## इस युद्ध का यमन पर प्रभाव:

- संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, यमन में अब दुनिया का सबसे बड़ा मानवीय संकट है, जसिकी 80% आबादी सहायता और सुरक्षा पर निर्भर है।
- वर्ष 2015 से 30 लाख से अधिक लोग अपने घरों से वस्थापति हुए हैं और स्वास्थ्य सेवा, जल, स्वच्छता एवं शिक्षा जैसे सार्वजनिक सेवा क्षेत्र या तो समाप्त हो गए हैं या गंभीर स्थिति में हैं।
- यमन आर्थिक रूप से संकट में है, आर्थिक उत्पादन में 90 बलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ है, साथ ही 6,00,000 से अधिक लोगों ने अपनी नौकरी खो दी है। देश की आधी से ज़्यादा आबादी व्यापक गरीबी में जी रही है।

## यमन संकट के कारण भारत और वशि्व की चिंताएँ:

- वैश्विक:
  - अंतरराष्ट्रीय तेल शपिमेंट के लयि अदान की खाड़ी से लाल सागर को जोड़ने वाले जलसंधि में यमन का अवस्थिति होना यह चिंता उत्पन्न करता है ककि यमन संकट वशि्व भर में तेल की कीमतों को कसि प्रकार प्रभावित करेगा।
  - यमन में अल-कायदा और IS से जुड़े समूहों की उपस्थिति वैश्विक सुरक्षा के लयि जोखमि पैदा करती है।
- भारत:
  - यमन भारत के लयि कच्चे तेल का एक प्रमुख स्रोत है और तेल आपूर्ति शृंखला में कोई भी व्यवधान भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है।
    - यमन, सऊदी अरब, ईरान में रह रहे भारतीय प्रवासियों की बड़ी आबादी भारत के लयि एक चुनौती है।
      - भारत पर अपने नागरिकों की सुरक्षा और संरक्षा सुनिश्चित करने एवं प्रेषित धन (Remittances) में कसि भी व्यवधान के प्रभाव का प्रबंधन करने की ज़िम्मेदारी है, जो भारत में कई परिवारों के लयि आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

## भारत की पहलें:

- ऑपरेशन राहत:
  - भारत ने अप्रैल 2015 में यमन से 4000 से अधिक भारतीय नागरिकों को निकालने के लयि बड़े पैमाने पर हवाई और समुद्री अभियान शुरू कयि।
- मानवीय सहायता:
  - भारत ने अतीत में यमन को भोजन एवं चकितिसा सहायता प्रदान की है तथा वगित कुछ वर्षों में हज़ारों यमन- नागरिकों ने भारत में चकितिसा उपचार का लाभ उठाया है।
  - भारत वभिन्नि भारतीय संस्थानों में बड़ी संख्या में यमन- नागरिकों को शिक्षा की सुविधा भी प्रदान करता है।

**UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न**

प्रश्न. हाल ही में नमिनलखिति में से कनि देशों में लाखों लोग या तो भयंकर अकाल एवं कुपोषण से प्रभावति हुए या उनकी युद्ध/संजातीय संघर्ष के चलते उत्पन्न भुखमरी के कारण मृत्यु हुई? (2018)

- (a) अंगोला और ज़ाम्बिया
- (b) मोरक्को और ट्यूनीशिया
- (c) वेनेज़ुएला और कोलंबिया
- (d) यमन और दक्षिण सूडान

उत्तर: (d)

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/hope-for-peace-in-yemen>

